खाद्य प्रसंस्करण में 50 हजार करोड़ का एफडीआइ

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया वर्ल्ड फूड इंडिया का उद्घाटन, बोले- प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात भी 150% बढ़ा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र को उभरता उद्योग बताया और कहा कि नौ वर्षों में इसमें 50 हजार करोड़ रुपये का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआइ) आया है, जो उद्योग एवं कृषि नीतियों का परिणाम है। इस दौरान प्रसंस्कृत खाद्य के निर्यात में 150 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह बातें पीएम मोदी ने 'वर्ल्ड फूड इंडिया' के दूसरे संस्करण का उद्घाटन करते हुए कहीं। राष्ट्रीय राजधानी के भारत मंडपम में होने वाला यह कार्यक्रम तीन दिनों तक चलेगा। इस मौके पर एक लाख से अधिक स्वयं सहायता समूहों को प्रारंभिक पूंजी के रूप में आर्थिक सहायता दी गई। कार्यक्रम में 80 से अधिक देशों के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। इस आयोजन का उद्देश्य भारत को 'दुनिया की खाद्य टोकरी' के रूप में प्रदर्शित करना है।

नई दिल्ली में शुक्रवार को भारत मंडपम में वर्ल्ड फूड इंडिया के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी • प्रेट

- **समारोह में एक लाख से अधिक स्वयं सहायता समूहों को प्रारंभिक पूंजी के रूप में आर्थिक सहायता दी गई**
- **पीएम ने बाजरा को 'सुपरफूड बकेट' बताया, भोजन में श्रीअन्न की हिस्सेदारी बढ़ाने पर चर्चा का किया आग्रह**

एग्री इन्फ्रा फंड पर चल रहा काम

प्रधानमंत्री ने प्रौद्योगिकी एवं फूड स्ट्रीट की सराहना करते हुए कहा कि प्रौद्योगिकी और स्वाद का मिश्रण अर्थव्यवस्था का भविष्य तय करेगा। उन्होंने उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना को नए उद्यमियों के लिए मददगार बताया और कहा कि फसल कटाई के बाद के बुनियादी ढांचे के लिए एग्री-इन्फ्रा फंड के तहत कई योजनाओं पर काम चल रहा है। मत्स्य पालन एवं पशुपालन क्षेत्र में भी निवेश को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

> भारत में नौ करोड़ से अधिक महिलाएं स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी हैं। उनमें खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का नेतृत्व करने की नैसर्गिक क्षमता है। उनके लिए हर स्तर पर कुटीर उद्योगों और स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा दिया जा रहा है। -नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

50 अरब डालर से अधिक का कृषि निर्यात

प्रधानमंत्री ने कहा कि नौ वर्षों में कृषि निर्यात में भारत का स्थान सातवां है। 50 अरब डालर से अधिक का निर्यात होता है। खाद्य प्रसंस्करण में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहां वृद्धि नहीं हुई है। भारत की खाद्य प्रसंस्करण क्षमता 12 लाख टन से बढ़कर दो सौ लाख टन हो गई है। नौ वर्षों में 15 गुना वृद्धि है। इस उद्योग से जुड़ी हर कंपनी और स्टार्ट-अप के लिए स्वर्णिम दौर है। निर्यात में प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की हिस्सेदारी 13 से बढ़कर 23 प्रतिशत हो गई है। उन्होंने निर्यात होने वाले उत्पादों के नाम भी गिनाए, जैसे हिमाचल प्रदेश से काले लहसुन, जम्मू-कश्मीर से ड्रैगन फ्रूट, मध्य प्रदेश से सोया दूध पाउडर, लद्दाख से सेब, पंजाब से कैवेंडिश केले, जम्मू से गुच्ची मशरूम और कर्नाटक से कच्चा शहद शामिल हैं।

प्रधानमंत्री ने भारत की खानपान की विविधता का जिक्र करते हुए कहा कि दूसरे देशों को भी हमारी खाद्य परंपराओं से सीखना है। हमारे पूर्वजों ने भोजन की आदतों को आयुर्वेद से जोड़ा था, जो हमारी वैज्ञानिक समझ को दर्शाता है। आयुर्वेद में कहा गया है 'ऋत-भुक' यानी मौसम के अनुसार भोजन, 'मित भुक' यानी संतुलित आहार और 'हित भुक' यानी स्वस्थ भोजन। स्वस्थ भोजन के प्राचीन ज्ञान को समझने और लागू करने पर जोर देते हुए प्रधानमंत्री ने बाजरा को 'सुपरफूड बकेट' बताया और कहा कि देश में इसकी पहचान श्रीअन्न के रूप में की गई है। भले ही पुराने समय में बाजरा को प्राथमिकता दी जाती थी, किंतु कुछ दशकों में इसे भोजन से बाहर कर दिया गया है। इससे स्वास्थ्य, खेती के साथ अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान हुआ है। पीएम ने भोजन में श्रीअन्न की हिस्सेदारी बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा करने के साथ ही सामूहिक प्रारूप तैयार करने का आग्रह किया।